चन्दामामा

माँ - बच्चों का मासिक पत्र



...MA : STORY MAGAZINE FO...



एक देश में एक राजा था। बहुत दिनों तक उसको कोई सन्तान न हुई। राजा बहुत चिन्तित रहने लगा। उसने कुछ दिन बाद एक दूसरा ब्याह कर लिया। दूसरी रानी बड़ी सुन्दरी और सुशीला थी।

बहुत दिनों बाद छोटी रानी गर्भवती हुई। राजा अब छोटी रानी को और भी प्यार करने लगा। बड़ी रानी यह सब देखकर मन ही मन जलने लगी। इसी तरह आठ महीने बीत गए। एक दिन राजा शिकार खेलने निकला। जाते समय उसने छोटी रानी से कहा -"मैं शिकार खेलने जा रहा हूँ। अगर इस बीच में प्रसव हो जाए, तो महल की घण्टियाँ बजवा देना। घण्टी का शब्द सुनते ही मैं आ जाऊँगा। यह कहकर राजा शिकार खेलने चला गया।

दूसरे ही दिन छोटी रानी के जुड़वा बच्चे पैदा हुए। दोनों बेटे ही थे। अब तो बड़ी रानी के पेट में खलबली मच गई। उसने छोटी रानी के भोजन में कोई दवा मिला दी। इससे छोटी रानी के होश हवास जाते रहे। तब बड़ी रानी ने दासियों से कहकर उन दोनों बच्चों को बाहर के बगीचे में फेंकवा दिया और बच्चों के बदले छोटी रानी के पलङ्ग पर लकड़ी के दो कुन्दे रखवा दिए। यह सब कारगुजारी करके उसने महल की घंटियाँ बजवा दी। उसने दासियों को बहुत सा घूस दिया जिससे वह किसी से कहे नहीं।

शिकार खेलते खेलते राजा ने जैसे ही अपने महल की घण्टियों की आवाज सुनी, वह खुशी से उछल पड़ा और उल्टे पर लौट आया ,महल के अन्दर पाँव रखते ही बड़ी रानी ने आकर कहा -"सुना आपने! आपकी लाडली रानी ने दो कुन्दे पैदा किए हैं। राजा घबराया हुआ प्रसब-घर में गया। वहाँ जाकर देखता क्या है कि सचमुच

पलङ्ग पर दो कुन्दे पड़े हैं। राजा बड़े रानी के प्रपञ्च में पड़ गया। उसे विश्वास हो गया कि सचमुच ही कुन्दे पैदा हुए हैं। कुछ दिन तक तो उसने खाना-पीना छोड़ दिया। उसकी सारी आशाएँ मिट्टी में मिल गई। धीरे-धीरे उसने मन को सम्भाला।

बगीचे में फेंके हुए उन सुन्दर बच्चों को राजमहल की एक नेक दासी ने देखा। वह उन बच्चों को अपने घर ले जाकर बड़े जतन से पालने लगी। दोनों राजकुमार उस दासी के घर में सुख से पलने लगे। दासी अपनी जान लगाकर उनकी देखभाल करती थी। वह बड़े हुए। उनके रूप गुण और शील को देखकर सब लोग अचरज में पड़ जाते थे।

इसी तरह कुछ और बरस बीत गए। एक दिन उन राजकुमारों ने दासी से पूछा -"माँ ! हमारे पिताजी कहाँ हैं ? सभी बच्चों के बाप घर आते हैं। अपने बच्चों के लिए बहुत सी चीजें लाते हैं। बच्चे अपने आप की गोद में चढ़कर घूमते-फिरते हैं। हमारे पिताजी कहाँ गए ? घर क्यों नहीं आते ? हम उनको कब देखेंगे माँ ?"



दासी ने कहा -"तुम दोनों यहाँ के राजा के पुत्र हो। तुम्हारे पिता की दो रानियाँ हैं। छोटी रानी तुम्हारी माँ है। तुम्हारी सौतेली माँ ने तुम दोनों के पैदा होते ही ईर्ष्या के कारण एक बगीचे में फेंकवा दिया और राजा से कह दिया कि तुम्हारी माँ ने लकड़ी के दो कुन्दे पैदा किए हैं। राजा ने उनकी बातों पर विश्वास कर लिया। संयोग से उसे दिन मैं बगीचे में गई और तुम लोगों को पड़े देखकर उठा लाई और छुपा कर पालने पोसने लगी।" उसने सारा किस्सा उन दोनों भाइयों को कह सुनाया। सुनकर राजकुमारों ने कहा -"अच्छा ! ऐसी बात है ?" फिर वे खेलने चले गए।



वे राजमहल के इस बगीचे में एक जगह खेला करते थे। राजमहल की खिड़कियों से वह जगह अच्छी तरह दिखाई देती थी। राजा रोज महल पर से उन्हें खेलते हुए देखा था। उनके सुन्दर प्यारे प्यारे मुखड़े देखकर राजा के हृदय में एक हूक सी उठ जाती थी। वह सोचने लगता -"यह प्यारे बच्चे न जाने किसकी आँखों के तारे हैं ! जाने उसने कौन से पुण्य किए थे कि ऐसे पुत्र पाए ! मेरा तो भाग्य फूट गया। बड़ी आस लगाकर दूसरा विवाह किया। लेकिन दुर्भाग्य ! उसने पैदा किया लकड़ी के कुन्दे। जाने लोग अपने मन में क्या सोचते होंगे।"

एक दिन राजा सबेरे सबेरे बगीचे में टहलने गया। उस समय हुए दोनों राजकुमार भी वहीँ खेल रहे थे। एक के हाथ में एक काठ का हाथी था और दूसरे के हाथ में मिट्टी का एक हाथी। मिट्टी के हाथी वाला राजकुमार अपने हाथी को तालाब के किनारे ले गया और बोला -"हाथी मेरे ! पानी पी ! सूँड़ उठाकर पानी पी।" दूसरे ने भी अपने हाथी से कहा -"हाथी मेरे ! पानी पी ! सूँड़ उठाकर पानी पी।" राजा वहीँ खड़ा-खड़ा यह सब देख रहा था। बच्चों के पास जाकर उसने कहा -"बच्चों ! कहीं मिट्टी और काठ के हाथी भी पानी पीते हैं !" बच्चों ! जानते हो उन दोनों लड़कों ने क्या जवाब दिया ? दोनों ने एक स्वर में कहा -"पिएँगे क्यों नहीं ? जब यहाँ के राजा के घर में रानी के गर्भ से कुन्दे पैदा हो सकते हैं तो हमारे यह हाथी पानी क्यों न पिएँगे "

बच्चों के मुँह से यह बात सुनकर राजा सन्नाटे में आ गया। उनकी बातें उसके हृदय में चुभ सी गई। उसने सोचा -"इन दूधमुँहे बच्चों को राजमहल का रहस्य कैसे मालूम हुआ ? यह तो पाँच साल पहले की बात है। इन्हें कैसे मालूम हो सकी ? जरूर

इसमें कोई न कोई भेद भरा है।" यह सोचकर उसने उन लड़कों से पूछा - "बच्चों ! तुम्हारी बातें सुनकर मुझे बड़ा अचरज हो रहा है। बताओ तो, तुम किसके बेटे हो?"

लड़कों ने कहा -"हम इस देश के राजा के लड़के हैं। बुढ़िया ने पाल-पोस कर हमको बड़ा किया है।" यह कहकर उन्होंने राजा को अपना घर भी दिखा दिया। राजा तुरन्त बुढ़िया के पास गया और सारा किस्सा सुनकर अचरज में आ गया। उसने बुढ़िया को बहुत धन्यवाद दिया और बड़ी खुशी से दोनों लड़कों को अपने साथ महल मैं ले गया।

महल में जाकर उसने तुरन्त बड़ी रानी को बुलाया और डपट कर पूछा -"सच-सच बोलो ! क्या छोटी रानी के कुन्दे ही पैदा हुए थे ?" बड़ी रानी को काटो तो खून नहीं ! उसने थर थर काँपते अपनी करतूत बयान कर दी और रोते हुए राजा के पैरों पर गिर पड़ी। छोटी रानी घर से निकली और सब हाल जानकर अनुरोध करने लगी कि बड़ी रानी को माफ कर दिया जाए। राजा ने छोटी रानी की बात मानकर बड़ी रानी को माफ कर दिया।



शुभ घड़ी देखकर राजा ने बुढ़िया और राजकुमारों को अपने महल में बुला लिया। दोनों बच्चों को देखकर छोटी रानी पागल हो उठी। आँसू बहते हुए पुलकित होकर उसने दोनों को छाती से लगा लिया। बड़ी रानी भी बदल गई और उन बच्चों को अपनी गोद में लेकर आँसू बहने लगी। सबके मन का मैल धुल गया। बच्चों को देखकर सबों का दिल उमड़ पड़ा। सबों ने उसे दासी को दिल से धन्यवाद दिया। राजा ने बुढ़िया को बड़े आदर के साथ राजमहल में रखा। राजभर में घर-घर में दिवाली मनाई गई।



पुराने जमाने में एक कत्थक रहता था। वह एक ढोलक और एक मजीरा बजाने वाले को साथ लेकर गाँव -गाँव घूम कर कथा बाँचा करता था। वह एक बार एक गाँव में गया। जाकर उसने मुखिया को अपने आने की खबर दी। कत्थक के आने की बात सुनते ही गाँव वाले बड़े खुश हुए। उन्होंने जोश के साथ कत्थक जी से रामायण की कथा सुनने का इन्तज़ाम किया।

लेकिन तब सवाल उठा कि कत्थक को खिलाएगा-पिलायेगा कौन ? तब बेचूराम पाण्डे ने, जिनको कथा सुनने का बड़ा शौक था, तुरन्त उठकर कहा -"जितने दिन कथा होगी, कत्थक और उनके साथियों को खिलाने का जिम्मा मुझे छोड़कर और किसी को सौंपने की जरूरत न होगी।" यह सुनते ही गाँव वाले बड़े खुश हुए। चारों तरफ पाण्डे जी की वाहवाही होने लगी। लेकिन पाण्डे जी की पत्नी सूरजमुखी देवी को दूसरों के घर खाने का शौक था। किसी को अपने घर खिलाने का शौक न था। पाण्डे जी की इस मूर्खता की खबर जब उन्हें लगी, तो उनके दिल की धड़कन एक बार रुक गई। पाण्डे जी ने दस आदमियों के बीच यह न्योता दिया था। इसीलिए अब टालने का कोई उपाय तो था नहीं। सूरजमुखी देवी बहुत देर तक सोचती रही। आखिर उसने एक ऐसा उपाय सोच निकला जिससे साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे। जब पति ने पूछा कि आज रसोई में क्या-क्या बना रही हो तो उसने जवाब दिया -"आज पहला दिन है। इसलिए कुछ पकवान बनाना चाहती हूँ। आप बाजार जाकर आटा, शक्कर और घी ले आइए।" यह सुनकर पाण्डे जी ने सोचा -"आहा ! ऐसी आज्ञाकारिणी पत्नी दूसरी कहाँ मिलेगी ?" वह तुरन्त बाजार जाकर चीज ले आए।

गणेशप्रसाद गुप्त



पण्डिताइन रसोई बनाने लगी। पाण्डे जी मेहमानों को बुला लाए और बैठक में बिठाकर उनसे इधर-उधर की बातें करने लगे। कत्थक जी ने कुछ गाने सुनाए। पण्डित जी की खुशी का ठिकाना न रहा। इधर पण्डिताइन जी ने सिर्फ अपने घर के लिए रसोई बनाई। उसने पण्डित जी को बुलाकर कहा -"अब आप हाथ पाँव धोकर आ सकते हैं।" यह सुनकर पण्डित जी मेहमानों के साथ हाथ पाँव धोकर आए। वे खाने के लिए बैठना ही चाहते थे कि पण्डिताइन ने कहा -"हाय रे मेरी अक्ल ! मैं तो पत्तल की बात भूल ही गई। घर में पत्तल तो है ही नहीं।" "अच्छा, तुम कोई चिन्ता न करो। मैं अभी ले आता हूँ।" यह कहकर पण्डित जी चाकू लेकर तालाब के किनारे बाड़ी से केले के पत्ते काटने गए।

पति के लाए हुए आटे से पण्डिताइन जी ने पकवान तो बना लिए लेकिन थोड़ा सा आटा बचाकर उसने तीन पुतले बनाए। पण्डिताइन जी के चार लड़के थे जो वहीँ बैठे-बैठे यह सब देख रहे थे। उनमें से एक ने उन पुतलों को देखकर पूछा -"माँ ! माँ ! यह कौन है ?" तब पण्डिताइन जी ने जरा जोर से, जिससे उनकी बात बैठक में मेहमानों को सुनाई पड़े, जवाब दिया -"यह तो कत्थक महाराज है। यह ढोलक वाले हैं और यह मजीरे वाले हैं।" बाहर बैठे मेहमानों को क्या मालूम था कि ये आटे के पुतले हैं ! उन्होंने समझा कि उन्हीं के बारे में बातचीत हो रही है। दूसरा बच्चा फिर पुतलों की और ऊँगली उठाकर बोला -"माँ !तुम इन्हें क्या करोगी ?" "खौलते हुए तेल में डालकर इन्हें धीमे-धीमे पकाऊँगी।" माँ ने जवाब दिया। यह सुनकर बाहर बैठे कत्थक और उनके साथियों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगी। बेचारे कान

खड़े करके सुनने लगे। पण्डिताइन कह रही थी -"जब यह अच्छी तरह पक जाएँगे तो तुम लोगों को दे दूँगी।" तब बड़े लड़के ने पहले पुतले की ओर देखकर कहा -"माँ ! मैं कत्थक को खाऊँगा।" दूसरे लड़के ने दूसरे पुतले की और ऊँगली उठाई -"माँ ! मैं ढोलक वाले को खा जाऊँगा।" तीसरे लड़के ने तीसरे पुतले की और गौर से देखकर कहा -"माँ ! मैं मजीरे वाले को खा जाऊँगा।" यह बातें सुनकर बाहर बैठे मेहमानों के बदन से पसीना छूटने लगा। वे लोग काना-फूसी करने लगे -"कहीं हम भूल से भूतों के घर में तो नहीं आ गए हैं ?" इधर अपने तीनों भाइयों की बातें सुनकर चौथे से रहा न गया और उसने हठ करते हुए कहा -"माँ ! माँ ! तुम भैया को एक भी न दो। तीनों को मैं ही खा जाऊँगा।" बस ! अब मेहमानों को कोई शक न रहा। उनको विश्वास हो गया कि जरूर वह राक्षसों के घर में आ गए हैं। वह लोग सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए। पीछे घूम कर भी नहीं देखा। आखिर जब दूसरे गाँव में पहुँच गए तो उन्होंने दौड़ना बन्द किया और सुस्ताने लगे।



पाण्डे जी पत्ते लेकर घर पहुँचे तो देखा की बैठक में मेहमान नहीं है। उन्होंने पत्नी से पूछा -"मेहमान लोग कहाँ गए ?" "क्यों ? क्या वह बैठक में नहीं है ?" पण्डिताइन ने पूछा जैसे उसे कुछ मालूम ही न हो। पाण्डे जी ने बड़ी देर तक मेहमानों की राह देखी। लेकिन जब सूरज ढलने लगा और वह न आए तब पछताते हुए पाण्डे जी उठे और उदास मन से खाने बैठे। पण्डिताइन मन ही मन मुस्कुरा रही थी। पर बोली कुछ नहीं।

बेचारे पाण्डे जी को और गाँव वालों को मालूम ही न हुआ कि कत्थक जी और उनके साथी गाँव छोड़कर अचानक क्यों भाग गए।



एक समय एक किले में एक राजा रहता था। उस किले के एक और एक घना जङ्गल था और उसमें आठ बनदेवियाँ रहती थीं। उनमें सात बनदेवियाँ तो बड़े मीठे स्वभाव की थीं। लेकिन एक बड़ी खोटी थी। वह हमेशा दूसरों की बुराई चाहती रहती थी।

सातों बनदेवियाँ छोटी-छोटी कुटियों में रहती थीं। लेकिन आठवीं एक काल कोठरी में सबसे छिपा कर रही थी। उन्हीं दिनों राजा के यहाँ एक लड़की पैदा हुई। उस लड़की का दमक रूप-रङ्ग देखकर उसका नाम "ज्योतिर्मयी" रखा गया। नगर के सभी लोग ज्योतिर्मयी को देखने आए। कुछ दिन बाद आठों बनदेवियाँ भी उसे देखने आईं। सात बनदेवियाँ तो उसके लिए अच्छे-अच्छे उपहार लाईं। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। लेकिन आठवीं देवी जो बड़ी खोटी थी, उसकी सुन्दरता देखते ही ईर्षा करने लग गई। आशीर्वाद के बदले उसने उसे श्राप दिया -"तुम दिन भर नींद में मस्त रहो।"

राजा रानी यह श्राप सुनते ही शौक में डूब गए। यह देखकर पहले देवी ने उसे वरदान दिया -"ज्योतिर्मयी रात भर जगती रहो।" यह सुनकर आठवीं देवी का क्रोध और भी बढ़ गया और उसने कहा -"अच्छा ! ज्योतिर्मयी रात में जगती रहेगी। लेकिन चाँद की तरह पूनम होते ही उसकी ज्योति घटने लगेगी और अमावास होते ही गायब हो जाएगी।" यह सुनकर दूसरी देवी सामने आई और बोली -"एक राजकुमार जाकर ज्योतिर्मयी को ज्यों ही छुएगा त्यों ही वह इस श्राप से मुक्त हो जाएगी।" अब लाचार आठवीं बनदेवी चुप हो गई। लेकिन मन ही मन उसने सङ्कल्प कर लिया कि ज्योतिर्मय को वह कभी चैन से नहीं रहने देगी।

सरला देवी

ज्योतिर्मयी दिनभर ऊँघती रहती थी। दिन में उसकी आँखें कभी नहीं खुलती थी। पूनम के बाद दिन-दिन वह दुबली होने लगती और पीली पड़ने लगती। अमावस को वह सुध-बुध खोकर पड़ी रहती। लेकिन अमावस के बाद दिन दिन उसका तेज बढ़ने लगता और पूनम को वह अपने समस्त सौन्दर्य से भरकर जगमगा उठती।

श्राप के कारण ज्योतिर्मयी को लोगों से मिलना जुलना पसन्द नहीं होता था। अपने महल से वह कभी बाहर जाती भी न थी। उसे डर था कि न जाने लोग अपने मन में क्या सोचेंगे। यह देखकर राजा ने उसके लिए जङ्गल में किले के निकट ही एक सुन्दर कुटिया बनवा दी। राजकुमारी अब अपनी सखियों के साथ वहीँ रहने लगी। वह जगह उसे बहुत अच्छी लगती थी। वह वहाँ बहुत आराम से थी।

उस राज्य के पड़ोस में और एक राज्य था। दुश्मनों ने चढ़ाई करके उस पर कब्जा कर लिया और राजा को मार डाला। लेकिन राजकुमार अपनी जान बचाकर भाग निकला। वह भेस बदलकर यात्रा करते हुए जङ्गल में आ पहुँचा और छिपकर



अपने दिन काटने लगा। यह वही जङ्गल था जिसमें ज्योतिर्मयी रहती थी।

चाँदनी रात थी। राजकुमार दिनभर भटक भटक कर थका माँदा एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ था। इतने में ज्योतिर्मयी चाँदनी रात में चमचम करती नाचती थिरकती मधुर कण्ठ से गाती उसी ओर आ निकली। राजकुमार ने उसे देखा तो दङ्ग रह गया। ऐसी रूपवती कन्या उसने आज तक नहीं देखी थी। उसे यह मालूम न था कि यह पड़ोसी राजा की लड़की है। उसने तो उसका रूप देखकर समझ की कोई देवकन्या है। वह एकटक उसका रूप देखता रहा और मुग्ध होकर तन मन की सुध भूल गया।

जब उसे होश आया तो उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं है।

अब वह राजकुमार रोज उसकी खोज में रहने लगा। लेकिन दिन में वह कभी उसे दिखाई न देती थी। रात को कभी-कभी वह उसी पेड़ के पास पहुँच जाती थी। लेकिन राजकुमार उसे देखते ही सुध-बुध गँवा बैठता और वह आँखों से ओझल हो जाती। राजकुमार ने यह भी देखा कि दिन दिन उसकी कान्ति बढ़ती जाती है। उसने मन में निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो उस राजकुमारी का पता लगाकर उससे परिचय करना ही चाहिए। इसी लगन में वह सारे जङ्गल की खाक छानने लगा।

एक दिन जब वह इस उधेड़बुन में भटक रहा था, तो पहली बनदेवी ने उसे देखा और एक बुढ़िया का रूप धरकर उसे दर्शन दिया। उस बनदेवी को बहुत खुशी हुई कि उसके आशीर्वाद के अनुसार यह राजकुमार भटकता हुआ इस जङ्गल में आ पहुँचा। उसने सोचा कि अब शीघ्र ही ज्योतिर्मयी श्राप से मुक्त हो जाएगी। इसलिए वह बुढ़िया के भेस में राजकुमार को बुलाकर अपनी कुटिया में ले गई। वहाँ



उसने राजकुमार का खूब आदर सत्कार किया। फिर उसने ज्योतिर्मयी की सारी कहानी कह सुनाई और उसे एक जादू का लोटा दिया। उस बुढ़िया का आशीर्वाद पाकर राजकुमार उल्लास के साथ ज्योतिर्मयी को ढूँढने लगा।

अब तक दुष्ट बनदेवी को यह न मालूम था कि राजकुमार आकर इसी जङ्गल में रहने लगा है और वह ज्योतिर्मयी के रूप पर मुग्ध हो कर उसे ढूँढ रहा है। पर ज्यों ही उसे पता चला, वह इस कोशिश में लगी कि राजकुमार की ज्योतिर्मयी से भेंट न हो सके। वह तो जानती थी कि पूनम के बाद ज्योतिर्मयी का तेज घटने लगता है और वह कुरूप बन जाती है। अगर राजकुमार उसको उसी समय देख ले, तो वह जरूर उसे घृणा करने लगेगा। इसलिए उसने ऐसा मन्त्र मार दिया कि राजकुमार का पूनम के दरम्यान ज्योतिर्मयी से मिलन न हो सके।

उस दुष्ट बन देवी के मन्त्र के प्रभाव से राजकुमार भटक भटक कर हार गया। मगर ज्योतिर्मयी उसे कहीं दिखाई ना पड़ी।

एक दिन निराश होकर राजकुमार एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठा



हुआ था। पूनम कब की बीत गई थी। अमावस आ गई थी। दुष्ट बन देवी का मन्त्र उसी दिन समाप्त होने वाला था। राजकुमार उदास मन से पेड़ की छाया में बैठा हुआ था। इतने में बादल घिर आए। बिजली चमकने लगी और पल में मूसलाधार पानी पड़ने लगा।

इतने में राजकुमार को कोई आहट सुनाई पड़ी। बिजली की चमक में राजकुमार ने चारों ओर देखा उसे मालूम हुआ कि बरगद के दूसरी और कोई बैठा है। उसने नजदीक जाकर देखा एक बुढ़िया चादर ओढ़ दुबकी बैठी थी। वह जाड़े से थर-थर काँप रही थी। राजकुमार ने बुढ़िया के माथे पर हाथ डालकर देखा तो मालूम हुआ कि

जोर का बुखार चढ़ा हुआ है। तब राजकुमार ने बुढ़िया को अपनी गोदी में लिटा लिया और अपने लोटे में से थोड़ा पानी उसे पिला दिया।

आश्चर्य ! वह बुढ़िया तुरन्त एक सुन्दर राजकुमारी में तब्दील हो गई। राजकुमार ने उसे तुरन्त पहचान लिया। यह तो वही देवी थी जो चाँदनी रात में नाचती दिखाई दे जाती थी। यह वही सुन्दरी थी जिसके लिए वह इतने दिनों से जङ्गल की खाक छान रहा था।

थोड़ी देर में पानी बरसना बन्द हो गया। पौं फटी और रात बीत गई। इतने वर्षों के बाद ज्योतिर्मयी ने दिन का प्रकाश देखा। उसे भयङ्कर श्राप से वह मुक्त हो गई थी। थोड़ी देर में सातों वनदेवियों ने आकर उन दोनों को आशीर्वाद दिया। राजा ने बड़ी धूमधाम से ज्योतिर्मयी का विवाह उस राजकुमार से कर दिया। वह दोनों सुख से रहने लगे।

राजा बूढ़ा हुआ। उसने अपने दामाद को अपना राज दे दिया। ज्योतिर्मयी अपने पति के साथ गद्दी पर बैठी और राज करने लगी। दोनों एक दूसरे को दिल से प्यार करते थे। लेकिन बाहरी रूप पर मुग्ध होकर नहीं। राजकुमार जानता था कि रूप सदा एक सा नहीं रहता है। इसीलिए तो उसने बुढ़िया की सेवा की थी। रूप रहे या जाए, पर सच्चा प्यार दिन दिन बढ़ता ही जाता है। घटने का नाम नहीं लेता। राजकुमार के प्रेम से राजकुमारी का श्राप दूर हो गया। और वह दुष्ट देवी ! क्या उसे कोई सजा न मिला ? जो बिना कारण किसी से ईर्ष्या करता है, बुराई करता है, सताता है वह चैन से कैसे रह सकता है ? राजा ने उसे दण्ड दिया। जिस तरह राम की आज्ञा से सीता को सताने वाली शूर्पणखा के नाक कान कट गए थे, उसी तरह उसे दुष्टा की भी वही दुर्गत हुई। नाक- कान कट जाने पर उसकी दुष्टता छूट गई और वह राजकुमारी से प्रेम करने लगी।



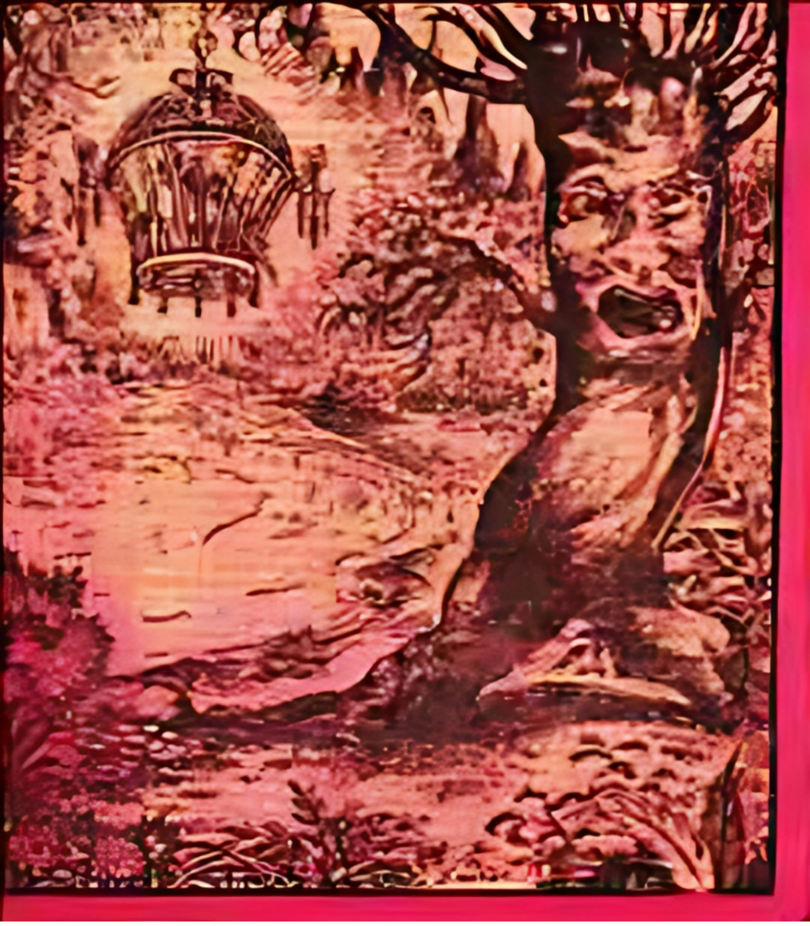


एक राजा था। उसकी एक रानी थी। उनके दो पुत्र और एक पुत्री थी। उस राजा को उसकी सारी प्रजा जी-जान से प्यार करती थी। लोग आपस में रहते थे कि इससे बढ़कर दूसरा कोई राजा नहीं है। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है ! एक दिन राजा अचानक बीमार पड़ा और चौबीस घण्टे के अन्दर ही चल बसा। रानी भी राजा के वियोग में बीमार हो गई। राज के बड़े-बड़े हकीम-बैद सभी रानी का इलाज करने आए। तरह-तरह की दवाएँ दी गई। लेकिन कोई फायदा न हुआ क्योंकि रानी को तो राजा की चिन्ता थी। चिन्ता के लिए दवा कहाँ मिलती है ?

इतने में एक दिन एक साधु उस राज्य में आया। उसे सब जगह रानी की बीमारी ही की चर्चा सुनाई पड़ी। तब उसने सोचा -"चलो, एक बार रानी को देखा तो आऊँ।" वह किले की ओर चला। लेकिन पहरेदार उसे अन्दर क्यों जान देने लगे ? उन्होंने झल्ला कर कहा -"जा ! जा ! बड़ा इलाज करने आया है ! ऐसे बहुत आए और गए।" लेकिन साधू वहाँ से न हिला। वह अन्दर जाने के लिए बार-बार गिड़गिड़ाने लगा। आखिर जब पहरेदारों ने देखा कि यह पिण्ड छोड़ने वाला नहीं, तो उस हठी को उन्होंने अन्दर भेज दिया। साधु रानी के पास पहुँचा और बीमारी की जाञ्च करके कहा -"बेटी ! तुम्हारी बीमारी तन की नहीं मन की है। इस पर मामूली दवाएँ काम नहीं करती। ऐसी बीमारी का इलाज सिर्फ साधु महात्मा ही कर सकते हैं।"

साधु की बातें सुनकर रानी को बहुत खुशी हुई। उसने हाथ जोड़कर विनय भाव से कहा - "महाराज ! आप सचमुच महात्मा हैं। आपने मेरी बीमारी ठीक-ठाक पहचान

प्रभावती देवी



ली है। मेरे भाग से आपके दर्शन हुए। क्या आप मेरे रोग का कोई इलाज बता सकते हैं ?"

"इलाज तो है। लेकिन है वह बड़ा कठिन। इस शहर से बहुत दूर उत्तर दिशा में एक राक्षसी रहती है। उस राक्षसी के राज में तीन विचित्र बस्तुएँ हैं। अगर कोई वे तीनों चीज वहाँ से ले आए, तो तुम्हारा रोग दूर हो सकता है। इसमें कोई शक नहीं। लेकिन उनको लाना बहुत मुश्किल काम है।" साधु ने कहा।

दोनों राजकुमार वहीं खड़े थे। उन्होंने जोश के साथ कहा -"संसार में कोई ऐसा काम नहीं है जिसे हम नहीं कर सकते। आप उसका पता बताइए। हम ले आएँगे ।"

"अच्छा, तो सुनो। उस राज्य में गाने वाला पेड़, बोलने वाला पञ्छी और सोने का पानी है। अगर तुम तीनों चीज वहाँ से ले आओ, तो तुम्हारी माँ चङ्गी हो जाएगी। लेकिन सावधान। बड़ी होशियारी से काम करना।" यह कहकर वह साधु अन्तर्धान हो गया।

पहली बार बड़ा लड़का राजभूषण यह चीज लाने चला। उसने कहा - "अगर मैं तीन महीने के अन्दर लौट कर आ गया, तो ठीक है। न आया तो समझ लेना कि कोई दुर्घटना हो गई है।" यह कहकर वह वहाँ से रवाना हुआ।

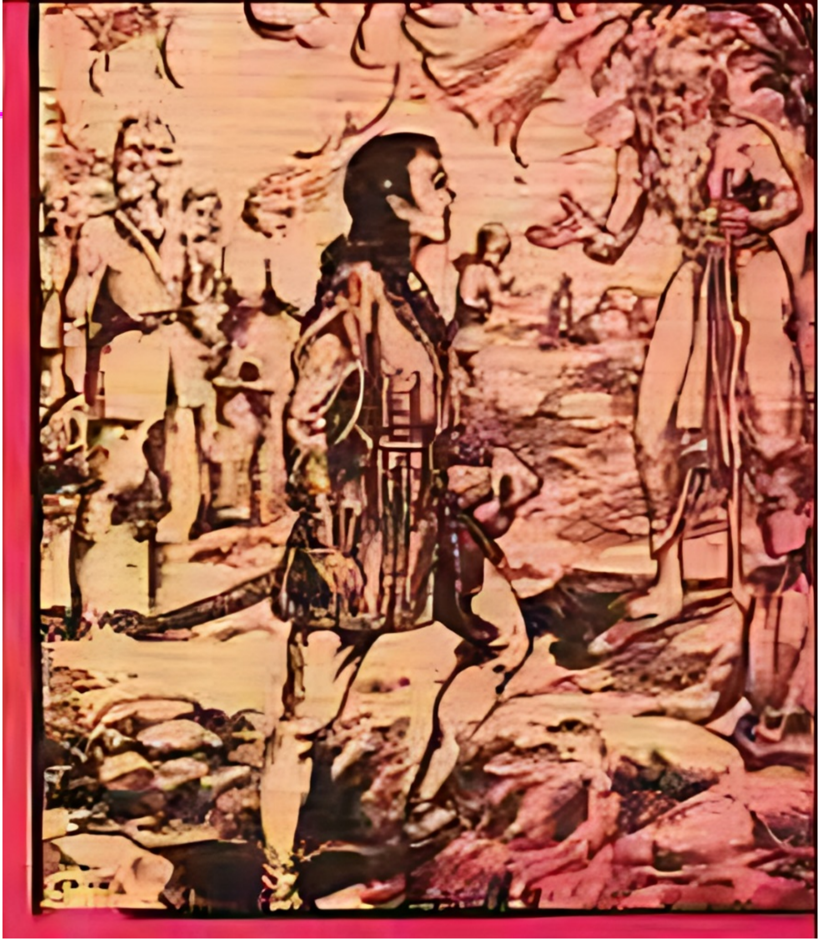
बहुत दूर तक जाने के बाद राजकुमार को एक बड़ा रेगिस्तान दिखाई पड़ा। वहाँ दूर-दूर तक बालू के सिवा और कुछ देखने में न आता था। लेकिन जगह-जगह पत्थर की मूर्तियाँ पड़ी हुई थी। थोड़ी दूर जाने के बाद पीछे से उसे किसी ने पुकार कर कहा -"हे राज भूषण ! मेरी बात मानकर तुम घर लौट जाओ। तुमसे यह काम नहीं हो सकता।" पहले तो राजभूषण ने सोचा कि

पीछे मुड़कर करारा जवाब दे। लेकिन फिर यह सोचकर कि यह सब राक्षसों की माया है वह सीधे आगे बढ़ता गया।

थोड़ी दूर जाने पर उसे सामने एक बूढ़ा आता दिखाई दिया। उस बूढ़े ने नजदीक आकर कहा -"तुमने जिस काम का बीड़ा उठाया है, वह बड़ा कठिन है ,लेकिन डरने की कोई बात नहीं ,अगर तुम मेरे कहे अनुसार चलोगे, तो जरूर कामयाब हो होंगे।"

"आपकी बात सिर आँखों पर।" राजभूषण ने कहा।

"तुम जानते हो कि वह सब पत्थर की मूर्तियाँ क्या है ? वह भी किसी समय तुम्हारी तरह राजकुमार थे। वह भी इसी काम पर आए थे। वे श्राप के कारण पत्थर की मूर्ति बन गए हैं। तुमने सुना है न पीछे से कोई तुन्हे पुकार रहा था ? पीछे मुड़कर अगर उसे कोई जवाब न दोगे तो वह तुम्हें पत्थरों से मारेंगे। अगर तब भी तुम पीछे न मुड़े, तो वह तुम पर थूकेंगे। यह सब राक्षसों की माया है। तुम अगर उनकी बातों में पड़कर पीछे देखोगे, तो तुम भी तुरन्त पत्थर की मूरत बन जाओगे।" बूढ़े ने



कहा। राजभूषण उसे बूढ़े को धन्यवाद देकर आगे बढ़ चला। थोड़ी दूर जाने के बाद पीछे से किसी ने उसे फिर पुकारा। लेकिन राजकुमार ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। तब पीछे से किसी ने उसे पत्थरों से मारा। फिर भी राजकुमार ने उसकी कोई परवाह न की। माँ की बीमारी दूर करने के लिए वह सभी कष्ट झेलने को तैयार हो गया। लेकिन इतने में पीछे से किसी ने उसे पर थूक दिया। बस ! तुरन्त राजकुमार को गुस्सा आ गया। वह तलवार निकाल कर दुष्ट को दण्ड देने के लिए पीछे मुड़ा। अब क्या था! राजकुमार तुरन्त एक पत्थर की मूरत बन गया।



तीन महीने बीत गए। लेकिन राजभूषण लौटकर न आया। तब सबको निश्चय हो गया कि वह जरूर किसी न किसी आफत में फस गया होगा। इसलिए दूसरा राजकुमार सुगुण-भूषण उसका पता लगाने चला। उसने भी तीन महीने के अन्दर लौट आने का वचन दिया। राह में उसे भी भाई की तरह कष्ट झेलने पड़े। उसने धीरज से सब कुछ सह लिया। लेकिन जब पीछे से किसी ने उसे पर थूक दिया, तो वह भी यह अपमान न सह सका। तलवार निकाल कर पीछे मुड़ा और पल में पत्थर की मूरत हो गया।

जब तीन महीने बीत गए और सुगुण-भूषण भी लौटकर नहीं आया, तो घर वालों को निश्चय हो गया कि वह भी किसी आफत में फँस गया। तब राजकुमारी हेमलता ने कहा कि मैं उन दोनों का पता लगाने जाऊँगी। पहले उसे सब लोगों ने रोका। दोनों राजकुमार लापता हो गए थे। अब यह भी चली जाती, तो फिर रानी किसको देखकर मन में धीरज धरती ! रानी ने भी उसे मना किया। लेकिन राजकुमारी ने किसी की न सुनी। उसने कहा -"अगर मैं अपने भाइयों की सङ्कट में सहायता न कर सकूँ, तो फिर मैं जी कर क्या करूँगी ? चाहे जो भी हो जाए, मैं तो जाऊँगी। जरूर देख लेना मैं अपने भाइयों के साथ तीन महीने के अन्दर लौट आती हूँ कि नहीं।" और वह चल पड़ी।

राजकुमारी को भी वह बूढ़ा दिखाई दिया। उस कोमल राजकुमारी को इतनी कठिन कार्य का बोझ उठाते देखकर बूढ़े को बड़ी दया आ गई। इसलिए उसने उसकी पूरी सहायता करने का निश्चय कर लिया। वह भी राजकुमारी के पीछे-पीछे चला और कदम-कदम पर उसे धीरज बँधाता रहा।



राजकुमारी ने बूढ़े की बातों का अक्षरक्षः पालन किया। वह कभी पीछे न मुड़ी। उसके दोनों भाई मर्द थे। इसलिए उन्हें जल्दी रोष आ गया था। लेकिन राजकुमारी ने बूढ़े की कृपा से कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। बूढ़ा भी उसके पीछे-पीछे उचित सलाह देता हुआ चल रहा था।

थोड़ी ही देर में राजकुमारी राक्षसी के राज में पहुँच गई। उसे आगे किसी नदी का चमकता हुआ, जगमग करता हुआ पानी दिखाई दिया। तब बूढ़े ने उससे कहा -"वही सोने का पानी है। उसकी एक बूँद छूते ही मरे हुए आदमी भी जी उठाते हैं। भयङ्कर से भयङ्कर रोग भी दूर हो जाते हैं।" यह बात सुनते ही राजकुमारी ने एक बोतल निकाली और उसमें सोने का पानी भर लिया।

पास ही एक पेड़ था। उस पेड़ के नीचे जाते ही राजकुमारी को एक मधुर गाना सुनाई दिया। उस पेड़ की एक डाल से एक पिञ्जरा लटक रहा था। उसी में एक पञ्छी था उसने राजकुमारी को देखते ही नाम लेकर पुकारा यही वह बोलने वाला पञ्छी था। इन दोनों को देखते ही राजकुमारी बहुत खुश हुई कि अब मेरा काम पूरा हो गया। तब बूढ़े ने उससे कहा -"राजकुमारी ! इस पेड़ की एक डाल तोड़ लो। उसे तुम अपने बाग़ में गाढ़ दो तो वह फिर एक बड़ा पेड़ बन जाएगा। इसमें जो पञ्छी है, वह तुम्हें अच्छी-अच्छी कहानी सुनाएगा। यह दोनों जिस जगह रहेंगे वहां हमेशा सुख शान्ति बरसती रहेगी।" राजकुमारी ने उस पेड़ की एक डाल तोड़ ली और पिञ्जरा भी उतार कर साथ ले लिया। अब वह खुशी-खुशी घर लौट चली।

थोड़ी दूर जाने पर उसे पत्थर की एक मूरत दिखाई दी। उसने बूढ़े की बात याद करके उसे मूर्ति पर एक बूँद सोने का पानी डाला। तुरन्त वह मूर्ति सुन्दर राजकुमार के रूप में तब्दील हो गई। यह देखकर राजकुमारी ने आश्चर्य के साथ सभी मूरतों पर सोने का पानी डाला। तुरन्त सभी मूर्तियाँ राजकुमारों के रूप में बदल गई। उन्हीं राजकुमारों में उसके दोनों भाई भी थे। उनको देखते ही राजकुमारी की खुशी का ठिकाना न रहा। अब तीनों खुशी-खुशी माँ की याद करते हुए घर पहुँचे।

इन तीनों को देखते ही रानी की आधी बीमारी दूर हो गई। सोने का पानी छिड़कने पर तो वह एकदम चङ्गी हो गई। सब लोग राजकुमारी की प्रशंसा करने लगे। लेकिन राजकुमारी को वह बूढ़ा याद आ रहा था जिसकी सहायता से यह काम पूरा हो सका था।

इतने में उसने देखा कि वही बूढ़ा उसके महल के दरवाजे पर खड़ा है। राजकुमारी ने तुरन्त उसे अन्दर बुला कर उसकी बड़ी खातिर की। उसने उसे नहला-धुला कर रेशमी कपड़े पहनाया। लेकिन आश्चर्य यह कि वह कपड़े पहनते ही वह बूढ़ा एक सुन्दर राजकुमार बन गया। उसने कहा -"मैं भी एक राजकुमार था। मैं भी तुम्हारी तरह ही नहीं तीनों चीजों के लिए घर छोड़कर चला था। लेकिन राक्षसी के श्राप से मेरी यह दशा हुई। आज राजकुमारी की कृपा से मेरा श्राप छूट गया।" यह सुनकर रानी को बड़ी खुशी हुई। उसने उस राजकुमार से राजकुमारी का ब्याह कर दिया। अब सब लोग सुख से रहने लगे।





बहुत पहले अब्बास नाम का एक लड़का रहता था। उसके जैसा भला लड़का दूसरा कोई न था। बेचारे के माँ-बाप बचपन में उसे छोड़कर चल बसे थे। इसलिए एक दयालु मनुष्य अब्बास का पालन पोषण कर रहा था।

एक बार अब्बास के देश में अकाल पड़ा। लोग भूखों करने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। अब्बास का मालिक बड़ी चिन्ता में पड़ गया। वह अब्बास को बहुत प्यार करता था। लेकिन इस हालत में वह क्या करे ?

इसलिए उसने अब्बास को बुलाकर कहा -"बेटा ! जब तक बदन में ताकत थी, घर में दौलत थी, मैंने तुम्हारा पालन-पोषण किया ,लेकिन अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। तिस पर चारों ओर अकाल पड़ गया है। मैं अपने बुढ़ापे की वजह से कहीं नहीं जा सकता। लेकिन तुम्हारे हाथों में ताकत है। तुम क्यों यहाँ घुट-घुट कर मरोगे ? तुम परदेस जाकर आमदनी से अपनी जान बचा सकते हो। इसलिए मैं तुम्हें यहाँ से दूर भेज देना चाहता हूँ।" अब्बास पहले तो राजी न हुआ। लेकिन बूढ़े के बहुत कहने सुनने पर वह उससे विदा लेकर घर से रवाना हुआ। चलते-चलते बहुत दूर जाने पर उसे एक पुराने किले के खण्डहर दिखाई दिए। तब तक साँझ हो गई थी।

अब्बास थका हुआ तो था ही। उस किले में जाकर लेट गया। उसे तुरन्त नींद आ गई। लेकिन नींद में ही उसे ऐसा मालूम हुआ मानो किसी ने इसका कन्धा छुआ हो। बहुत तुरन्त जग पड़ा। आँख खोलने पर उसे सिर्फ एक हाथ और उसमें एक दिया दिखाई दिया। अब्बास को बड़ा अचरज हुआ। उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया जब उसने देखा कि वह हाथ धीरे-धीरे एक और जा



रहा है। वह भी उठकर उस हाथ के पीछे पीछे चला और एक महल में जा घुसा।

उस महल में अनगिनत कमरे थे। एक बड़े कमरे में अनेकों पकवानों के साथ भोजन परोसा गया था। अब्बास भूखा तो था ही। उसने बैठकर पेट भर भोजन कर लिया। फिर हाथ धो कर दिए के पीछे-पीछे चला। थोड़ी दूर जाने पर एक सुन्दर कमरे में तरह-तरह की पोशाकें रखी मिली। अब्बास ने अपने फटे पुराने चिथड़े उतार फेके और राजकुमारों के से रेशमी कपड़े पहन लिए। वहीँ एक मुलायम पलङ्ग भी सजा हुआ था। वह उस पर लेट कर सो गया।

दूसरे दिन सवेरे जागते ही अब्बास को कहीं से एक आवाज सुनाई पड़ी। उसने सुना -"अब्बास ! तुम बड़े साहसी और सहनशील हो। इस किले में बहुत से लोग आए और गए। मगर कोई तुम्हारी तरह हिम्मत बाँध कर दिए कि पीछे-पीछे न चल सका। अगर तुम थोड़ा और साहस दिखा कर इस किले मैं तीन रात बिता सको, तो इससे एक राजकुमारी को बन्धन से छुटकारा मिलेगा। इससे तुम्हारा भी बहुत भला होगा।" यह सुनकर अब्बास ने निश्चय कर लिया कि चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाए, राजकुमारी को बह जरूर छुड़ा लगा। जब रात हो गई, तो अब्बास फिर पिछली रात की तरह खाना खाकर उसी पलङ्ग पर सो रहा। लेकिन आधी रात होते ही बहुत से लोग हाथों में लाठियाँ लेकर आए और उन्होंने अब्बास को खूब पीटा। बेचारी की हड्डी पसली चूर-चूर हो गई। लेकिन सवेरा होते-होते किसी ने अब्बास के सारे बदन पर ऐसा मलहम लगा दिया जिससे उसकी सभी घाव तुरन्त अच्छे हो गए। दर्द बिल्कुल नहीं रहा।

दूसरी रात को भी वे लोग फिर आए। उन्होंने उसे और भी पीटा। लेकिन अब्बास

के मुँह से "उफ्फ" तक न निकला। उसने सब कुछ सह लिया। किसी ने सवेरा होते ही फिर उसके बदन पर मलहम लगा दिया और उसका सारा दर्द दूर हो गया। तीसरी रात को भी उन लोगों ने आकर अब्बास का कचूमर निकाल दिया। लेकिन अब्बास ने साहस के साथ सब कुछ सह लिया। उस रात को वह जागता रहा। क्योंकि वह देखना चाहता था कि कौन उसके बदन पर मलहम लगा जाता है। सवेरा होते-होते वह ऊँघने लगा था कि इतने में किवाड़ खोलकर एक राजकुमारी वहाँ आई। उसने अब्बास के बदन पर मलहम लगा दिया। तुरन्त उसके घाव भर गए। सिर-दर्द गायब हो गया और वह फिर ज्यों-का-त्यों हो गया।

अब्बास के पूछने पर उस राजकुमारी ने अपनी कहानी सुनाई -"मैं यवन देश की राजकुमारी हूँ। मुझे दुश्मनों ने लाकर इस किले में बन्द कर दिया। उनके जादू के प्रभाव से मैं यहाँ बरसों से यूँ ही सड़ रही हूँ। अगर कोई इस किले में तीन रात बीताता तो जादू टूट जाता और मुझे रिहाई मिलती। इस किले में बहुत से राजकुमार भटकते भटकते आए। लेकिन कोई एक रात से ज्यादा न ठहर सका। लेकिन



तुम्हारी कृपा से आज वह जादू टूट गया और मुझे मुक्ति मिल गई। मैं अब अपने पिता के घर जाती हूँ। तुम मुझे वहाँ आकर मिलना।" यह कहकर राजकुमारी आँखों से ओझल हो गई।

जादू टूटते ही अब्बास के रेशमी कपड़े गायब हो गए और उसकी जगह वही पुराने चीथड़े वापस आ गए। वह फिर पुराना अब्बास बन गया।

राजकुमारी अपने पिता के घर जाकर बहुत दिनों तक अब्बास की राह देखती रही। लेकिन उसे निराश होना पड़ा। आखिर उसके पिता ने उसका ब्याह करने का

निश्चय किया। यहाँ तक कि ब्याह का दिन भी आ गया। राजकुमारी हाथी पर चढ़कर जुलूस में निकली। इतने में उसकी नजर तमाशा देखने वाले भीखमंगो पर पड़ी। उसने देखा अब्बास चीथड़ों में लिपटा उसके बीच खड़ा है। राजकुमारी के सिवा वहाँ अब्बास को कोई पहचानता न था।

तब राजकुमारी ने अपने पिता से और जितने सामन्त लोग हाजिर थे उनसे एक प्रश्न किया -"कुछ दिन पहले मेरे सन्दूक़ की कुञ्जी खो गई थी। तब मैंने नई कुञ्जी बनवाए। लेकिन नई कुञ्जी के बनते ही पुरानी कुञ्जी मिल गई। आप लोग बताइए मैं किस कुञ्जी से कम लूँ।" तब सब ने जवाब दिया की पुरानी कुञ्जी को काम में लगाना ही ठीक है। राजकुमारी तुरन्त हाथी से उतरकर भीखमंगो के बीच चली। वह अब्बास का हाथ पकड़ कर खींच लाई। उसने उसे सबके सामने खड़ा कर दिया और कहा -"यही वह कुञ्जी है।" सब लोग दङ्ग रह गए। तब राजकुमारी ने अपनी मुक्ति की सारी कहानी कह सुनाई। अब लोगों की समझ में आ गया की राजकुमारी ने कुञ्जियों वाला विचित्र प्रश्न क्यों किया था। लोगों को बड़ी खुशी हुई। उनका जवाब भी अब्बास के पक्ष में ही था। सबों ने एक शोर में कहा -"राजकुमारी ! तुम अवश्य अब्बास के साथ शादी करो। यह देवता से भी बड़ा है तुम्हारे लिए।" यह सुनकर राजा बहुत खुश हुआ। उसका सारा सङ्कोच दूर हो गया और उसने बड़े ठाठ-बाट से राजकुमारी का ब्याह अब्बास के साथ कर दिया।

अब्बास के कष्ट के दिन कट गए। अब वह राजकुमारी के साथ सुख से रहने लगा।





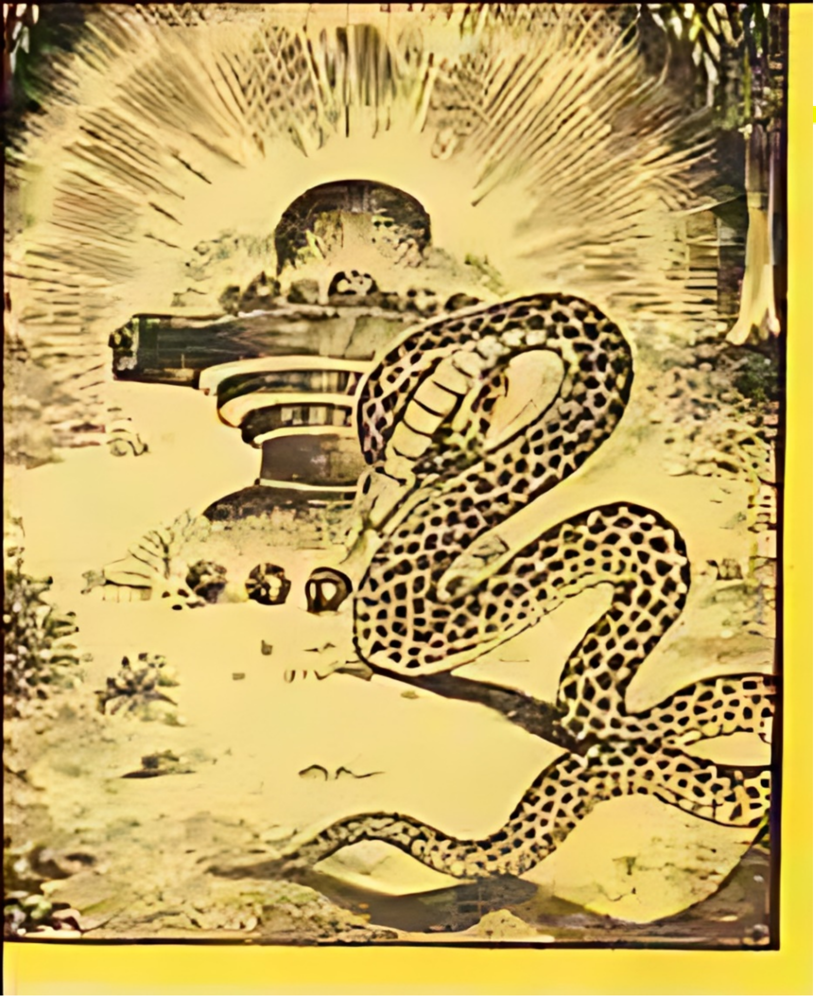
एक समय एक जङ्गल में महादेव लिङ्ग रूप में प्रकट हुए। उस जङ्गल में रात के वक्त एक कला नाग बिचरा करता था। वह नाग महादेव का बड़ा भक्त था। उसने जब उस लिङ्ग को देखा तो सङ्कल्प लिया कि वह रोज रात को लिङ्ग की पूजा करेगा। उस नाग के पास अनमोल मणियों का ढेर था। वह उन मणियों को बहुत चाहता था। इसलिए उसने मणियों से महादेव की पूजा करनी चाही। वह अपनी बाँबी में गया और अपने खजाने से तरह-तरह की मणि-माणिक ले आया। वह बड़ी भक्ति के साथ उन्हें लिङ्ग के ऊपर चढ़ा कर चला गया।

उसी जङ्गल में एक गजराज भी रहता था। वह हाथियों का राजा था। एक दिन वह गजराज वहाँ आया और उस लिङ्ग को देखकर मुग्ध हो गया। वह भी महादेव का बड़ा भक्त था। उसने झट सूँड उठाकर शिवजी को प्रणाम किया। लेकिन जब उसकी नजर मणियों पर पड़ी, तो उसे बड़ा गुस्सा आया। साँप मणियाँ पसन्द करता है। पर हाथी को वे क्यों पसन्द पड़े ? उसने सोचा - "कौन है वह बदमाश जो शिव जी के ऊपर कङ्कड़-पत्थर रख गया है ? उसने उन मणि-माणिकों को उठाकर दूर फेंक दिया और चला गया।

गजराज को क्या मालूम था कि वह मणियाँ है, कङ्कड़-पत्थर नहीं ! और जिस साँप ने उनसे पूजा की, वह भी महादेव का बड़ा भारी भक्त है ! उसका तो ख्याल था कि कङ्कड़-पत्थर शिवजी के निकट रखने योग्य नहीं है। इसलिए उसने उन्हें उठाकर दूर फेंक दिया था।

जिस तरह साँप को मणि-माणिक प्यारे होते हैं, उसी तरह हाथी को फूल पत्तों से

रामचन्द्र शास्त्री



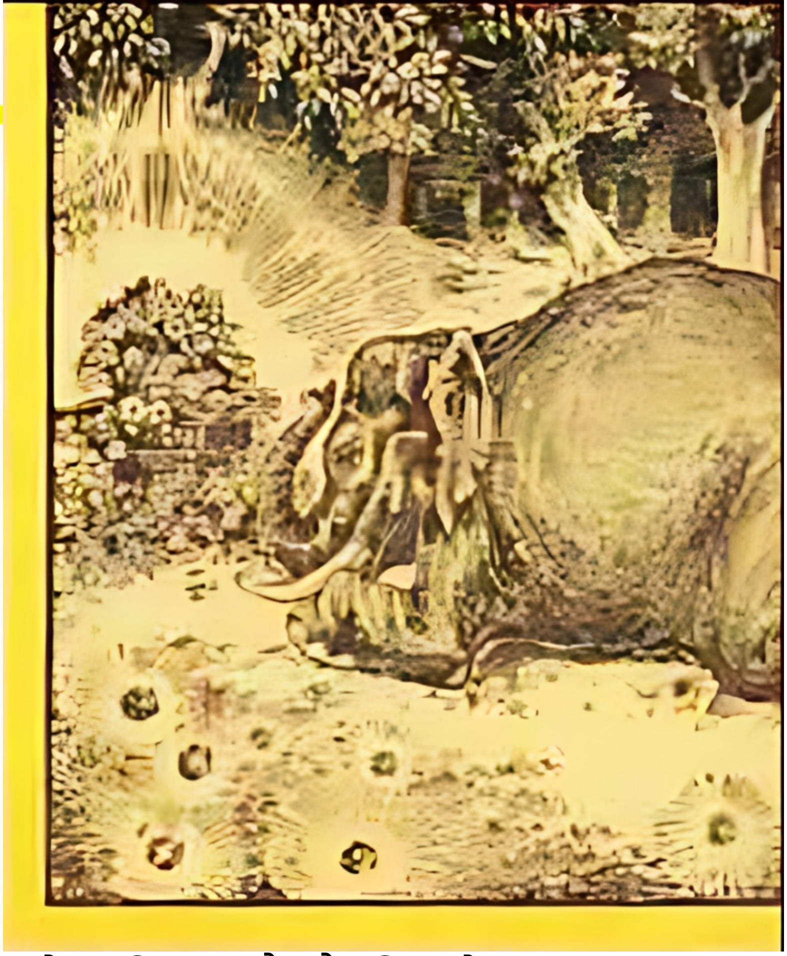
प्रेम होता है। गजराज थोड़ी देर तक जङ्गल में घूम फिर कर बेल के पत्ते तोड़ लाया। पोखर से कमल के फूल और पत्ते ले आया। फिर बड़ी देर तक शिवजी की पूजा करके घर लौट गया।

रात हुई। नई-नई मणियाँ लेकर नागराज बड़े उत्साह से शिवजी की पूजा करने आया। आकर देखा क्या है कि उसकी वही प्यारी मणियाँ दूर धूल में फेंकी हुई थी और शिवजी के ऊपर फूल पत्तों का कूड़ा-करकट पड़ा हुआ है। गजराज भक्ति भाव से जो फूल पत्ते तोड़ लाया था साँप ने उन्हें कूड़ा-करकट समझ लिया। उसने सोचा -"कौन है यह दुष्ट जो मेरी पूजा वस्तु दूर फेंक कर महादेव का ऐसा अपमान कर गया है ?" उसने वह फूल पत्ते बड़े क्रोध से चुन-चुन कर दूर फेंक दिए और मणियों से पूजा करके वहाँ से चला गया।

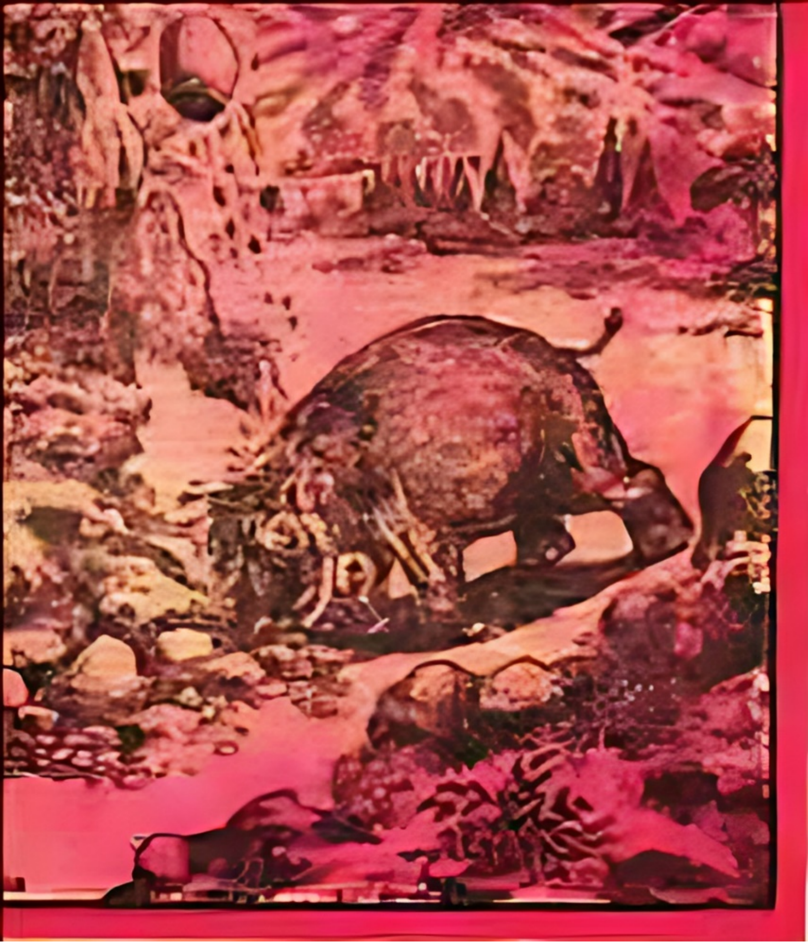
दूसरे दिन फिर गजराज पत्र पुष्प लेकर शिवजी की पूजा करने लगा। तब उसने देखा कि उसके फल फूल दूर फेके हुए हैं और शिवजी के ऊपर कङ्कड़-पत्थर जमा है। उसने सोचा -"वह दुष्ट तो फिर यहाँ आया और आकर यूँ ही नहीं गया। वह पूजा की सामग्री दूर फेंक कर फिर कङ्कड़-पत्थर डाल गया।" उसने क्रोध से फिर एक-एक करके सभी मणियाँ चुनकर दूर फेंक दी और फूल पत्तों से पूजा करके घर चला गया। इस तरह दो दिन बीत गए। तीसरी रात को नागराज फिर मणि-माणिक लेकर पूजा करने आया तो अपनी पूजा बस्तुएँ बिखरी देखकर उसे बड़ा दुख हुआ। शिवजी को बेकार के फूल पत्तों से ढका हुआ देखकर उसे बड़ा गुस्सा भी आया। उसने बड़ी दीनता से देखते हुए कहा – "भगवान ! मैं रोज आकर अमूल्य मणियों से आपकी पूजा कर जाता

हूँ। लेकिन कोई दुष्ट आकर मेरी पूजा के चिन्ह तक मिटाकर आप पर झाड़-उजाड़ रख जाता है। आप उसे कुछ नहीं कहते। आप अपनी तीसरी आँख खोल कर उसे पल में राख क्यों नहीं कर देते ? क्या आप इतना भी नहीं कर सकते हैं ? हाय ! मैं कितना बुद्धू हूँ। ईश्वर होकर आप क्या नहीं कर सकते हैं। मालूम होता है आप जानबूझकर चुप रह गए हैं। अपने इस भक्त को ठुकरा कर आप भी मेरे दुश्मन से मिल गए हैं। आप ऐसा क्यों करते हैं प्रभु? बताइए, मेरा क्या कसूर है?" इस तरह बहुत देर तक वह आँसू बहाता रहा। आखिर किसी तरह ढाँढस बाँधकर उसने अपने आँसू पोंछे और चुन चुन कर फल फूल दूर फेंक दिए। फिर झाड़ पोंछ कर अपने मणियों से शिवजी की पूजा की। पूजा के बाद बाँबी में लौटने के बाद भी नागराज को नींद न आई। वह इसी सोच में पड़ा रहा कि कैसे उस दुष्ट का पता लगे जो रोज आकर उसकी पूजा बिगड़ जाता है।

दूसरे दिन हाथी शिवजी की पूजा करने आया तो उसने देखा कि उसके फूल पत्ते फिर चुन चुन कर



फेंक दिए गए हैं और लिङ्ग के ऊपर कङ्कड़-पत्थर पड़े हैं। उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने शिवजी पर सवालों की झड़ी लगा दी -"कौन है यह मूर्ख जो बार-बार मुझे यूँ छेड़ता है ? खैर, उसकी बात छोड़ दीजिए। मगर यह तो बताइए कि आपको कङ्कड़-पत्थर कैसे भाते हैं। क्या यह अनगढ़ नील पत्थर मेरे नील कमल की बराबरी करेंगे ? क्या यह हरा पत्थर मेरे बिल्व-पत्र से भी से भी बड़े चढ़े हैं ? क्या यह भद्दी लाल पत्थर मेरे अरुण-कमल के समान हो सकते हैं ? मेरे अर्पित किए हुए फूलों में जो कोमलता, शीतलता, सुगन्ध है वह



इन कठोर कुरूप पत्थरों में कहाँ से आएगी ? आखिर उसने सोचा - "अच्छा ! आज तो मैं किसी तरह चुप हो रहता हूँ। लेकिन अगर कल भी ऐसा ही हुआ तो चाहे जो हो जाए मैं उस दुष्ट की जान लिए बिना नहीं रहूँगा। यह सोचकर वह रोज की तरह पूजा करके चला गया। लेकिन उसे भी उसे दिन इस चिन्ता के कारण नींद न आई।

रात को नागराज फिर पूजा करने जा पहुँचा। लेकिन फिर अपनी पूजा सामग्री को भग्न देखकर वह क्रोध से काँपने लगा। उसने सोचा -"कौन दुष्ट रोज इस तरह मेरा और भगवान का अपमान करता है ? आज मैं उसका पता लगाए बिना ना रहूँगा। जब तक मैं उसका वह मजा ना चढ़ा दूँ, तब तक यहाँ से न हिलूँगा। यही मेरी प्रतिज्ञा है।" इसलिए उसने उस दिन फूल पत्तों को उठाकर फेंका नहीं बल्कि उन्ही में छिपकर घात लगाए बैठा रहा।

ठीक समय पर गजराज भी आ पहुँचा। अपने फूल पत्ते ज्यों-के-त्यों देखकर उसे वह खुशी हुई उसका क्या कहना ! उसने सोचा -"हाय ! आज मैं कैसा भाग्यशाली हूँ। मालूम होता है वह दुष्ट कहीं चला गया जो रोज यहाँ कङ्कड़-पत्थर जमा कर जाता था। शायद मर गया होगा। मुझ पर दया करके महादेव ने ही मार डाला होगा।" यह सोचकर गजराज ने उन बासी फूलों को हटाने के लिए अपनी सूँड बढ़ाई।

नागराज छिपा-छिपा यह सब देख ही रहा था। उसने मन में कहा -"अच्छा ! तो इतने दिनों से आप ही मेरी पूजा भ्रष्ट कर रहे थे। भले आए। अब लीजिए अपनी करनी का फल चखिए। महादेव की कृपा से

आपको अभी मजा चाहता हूँ। यह कहकर वह साँप सर्र से हाथी की सूँड में घुस गया। वह भीतर ही भीतर उसके माथे तक पहुँच गया और नोचने लगा।

अब क्या था ! सूँड तो हाथी की नाक ही होती है। माथे तक साँप के घुसने और काटने से हाथी को जो भयङ्कर पीड़ा हुई उसका वर्णन कौन करे ? हाथी बौखला कर इधर-उधर दौड़ने और सूँड पटकने लगा। तालाब में जाकर अपनी सूँड में बार-बार पानी भरा और जोर-जोर से बाहर छोड़ा। लेकिन तब भी साँप न निकला। वह अन्दर ही चिपका रह गया। तब हाथी पेड़ों से जा टकराया और सूँड रगड़ने लगा। लेकिन फिर भी साँप न निकला।

अब गजराज नाकों दम हो गया। उसने सोचा -"यह साँप तो मेरे माथे में जहर उगल कर मुझे खत्म करेगा ही। फिर मैं ही इसे क्यों जीने दूँ ? सबसे अच्छा तो यही है कि मैं अपनी जान देकर भी से मार डालूँ ?" यह सोचकर उसने मरने का दृढ़ निश्चय कर लिया। सामने पहाड़ था। हाथी पहले खूब पीछे हटा और बड़ी तेजी



के साथ दौड़ा। उसने पहाड़ की एक भारी चट्टान से अपना माथा भिड़ा दिया। बस ! एक ही आवाज से साँप का कचूमर निकल गया। लेकिन हाथी की भी हड्डी पसली चूर हो गई और उसके प्राण पखेरू उड़ गए । रक्त का फब्वारा छूटा और वह वही ढेर हो गया।

कुछ देर बाद पार्वती महादेव से मिलने वहाँ आई। साँप और हाथी को वहाँ मरा पड़ा देख उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। उनके पूछने पर शिवजी ने सारा किस्सा कह सुनाया। तब पार्वती ने कहा -"यह दोनों तो आपके भारी भक्त हैं।" तब शिवजी ने

कहा -"दोनों मेरे भक्त तो हैं। मगर इनमें एक बड़ा भारी दोष था। दोष यह था कि इनको एक दूसरे की पूजा फूटी आँखों नहीं भाती थी। इसी से उनकी यह दुर्गति हुई। दुनिया में तरह-तरह के लोग होते हैं। वे तरह-तरह से मेरी पूजा करते हैं। मेरे लिए सब बराबर हैं। मुझे साँप की मणियाँ और हाथी के फूल पत्ते दोनों प्रिय हैं। लेकिन यह रहस्य यह मूढ़ भक्त न समझ सके। इसलिए यह एक दूसरे से लड़ मरे। हर एक आदमी को अधिकार है कि वह अपनी रीति नीति पर दृढ़ रहे। साथ ही दूसरे की रीति रिवाज का आदर भी करे। अपने ढङ्ग को सबसे अच्छा जानकार दूसरों से बैर-विरोध मोल न ले। पूजा का यही ढङ्ग सबसे अच्छा है।"

"आपका कहना बहुत ठीक है।" पार्वती ने कहा।

महादेव की दया से दोनों मोक्ष पा गए।

धीरे-धीरे उसे शिवलिङ्ग की महिमा चारों ओर फैली। साथ-साथ साँप और हाथी की भक्त-कहानी भी फैली। तब वहाँ के एक भक्त राजा ने उसे जङ्गल को साफ करवाया और वहाँ एक मन्दिर बनवा दिया। धीरे-धीरे मन्दिर के चारों ओर एक बस्ती बस गई। उसका नाम पड़ा "कालहस्ती"। "काल" का माने होता है साँप और हस्ती का माने होता है हाथी। उस जगह साँप और हाथी को मोक्ष मिला था। इसलिए उसका नाम पड़ा "कालहस्ती"। इस "कालहस्ती" में स्वर्ण मुखी नामक एक नदी है जिसमें सभी यात्री नहाते हैं। यहाँ शिवरात्रि के दिन बाद भारी उत्सव होता है। लाखों लोग यहाँ आकर भगवान शिव जी के दर्शन करते हैं।





कुछ ही देर में रानी को होश आया और वह चिल्लाई -"हाय ! मैं इस पेटी में कैसे आ गई ! मैं कहाँ हूँ ?" उसका चिल्लाना सुनकर नीचे रखवालों की जान में जान आई। उन्होंने सोचा -"हाँ ! नागराज रानी का बाल भी बाँका न कर सका। रानी सही सलामत हैं। यह सोचकर उन्होंने उस पेटी को जल्दी से नीचे उतारा। ताला खोल कर देखा। लेकिन भगवान ! यह क्या ? पेटी के अन्दर खून के पनाले बह रहे थे। सब लोग माथा पीटने लगे। राजा ने कटार निकाल कर अपनी छाती में भोंक देना चाहा। लेकिन मन्त्रियों ने उनका हाथ पकड़ कर कहा - "राजन ! अधीर न होइए। साँप के डसने से सभी लोग मर नहीं जाते। हमारे राज में बड़े-बड़े ओझा-गुनी है। उनकी झाड़-फूँक से रानी जरूर उठ बैठेंगे। तुरन्त सैकड़ो नामी ओझा-गुनी जाकर रानी को झड़ने फूँकने लगे।

इतने में रानी ने फिर आँखें खोल कर राजा को बुलवाया और हाथ पकड़ कर कहा -"महाराज ! आपके सारे प्रयत्न व्यर्थ हैं। मैं अब सिर्फ चन्द मिनट की मेहमान हूँ। सारे संसार में कोई ऐसा ओझा-गुनी नहीं है जो मेरी जान बचा सके। इसलिए मैं आपसे एक प्रतिज्ञा करना चाहती हूँ। आप भी कसम खाकर प्रतिज्ञा कीजिए कि जब तक मेरी सब बेटियों का ब्याह कर उन्हें ससुराल नहीं विदा कर देंगे, तब तक आप दूसरा ब्याह न करेंगे। क्योंकि यदि आप एक दूसरा ब्याह कर लेंगे, तो सौत आ कर मेरी लड़कियों को नाहक सताएगी और भूखों मार देगी। मैं इन दुधमुँही बच्चियों को आपके हाथों में सौंप जाती हूँ। राजा ने तुरन्त कसम खाकर कहा -"मैं दूसरा ब्याह करूँगा ही नहीं।"

बेचारी रानी के भाग्य में आखिरी बार सन्तान का मुँह देखना भी नहीं बदा था।



वह उसके पहले ही चल बसी। बरसों जिसे सन्तान के लिए तपस्या की, मनौतियाँ मानी, व्रत उपवास किया, आखिर वह सन्तान से मिले बिना ही चल बसी। आखरी दम तक वह लड़कियों का ही नाम रटती रही।

यों कुछ दिन बीत गए। राजा ने लड़कियों को माँ की कमी महसूस न होने दी। दरबारियों ने कई बार दूसरे विवाह की चर्चा चलाई। मन्त्रियों ने बहुत आग्रह किया। लेकिन राजा ने इनकार कर दिया।

आखिर मन्त्रियों ने एक उपाय सोचा। उन्होंने राजा की सातों बेटियों को एकान्त में बुलाकर कहा -"राजकुमारियों ! हमने तुम्हारे पिताजी से कई बार दूसरा विवाह करने का आग्रह किया। लेकिन वे तो हमारी बात मानते ही नहीं। अगर तुम सातों बहनें उन पर जोर डालो, तो शायद मान जाएँ। नई माँ आएगी तो तुम लोगों की भी अच्छी तरह देखभाल करेगी।

उन सात लड़कियों ने भी राजा से दूसरा विवाह करने का आग्रह किया। लेकिन राजा ने उनकी बात भी टाल दी।

लाचार होकर मन्त्रियों ने एक और उपाय किया। उन्होंने बहुत से कोल-भीलों को भेज कर सारा जङ्गल छनवा डाला। आखिर उन्हें मोहिनी-जड़ी मिली। उस जड़ी की महिमा ऐसी थी कि जो उसको खा ले, तुरन्त तन मन की सुध भूलकर ब्याह के लिए पागल हो उठे। मन्त्रियों ने रसोइए से कहकर राजा के भोजन में यह जड़ी मिलवा दी। इसका असर ऐसा हुआ कि दूसरे ही दिन राजा ने मन्त्रियों को बुलवाकर कहा -"मैं ब्याह करना चाहता हूँ। तुरन्त किसी सुन्दर राजकुमारी को ढूँढ लाओ।"

मन्त्री तो इसी ताक में बैठे ही थे। उन्होंने तुरन्त चारों ओर पुरोहितों को दौड़ा दिया। उनमें से एक ने अक्षरपुर के राजा

की कन्या को देखकर निश्चय किया कि यह लड़की महाराज के लायक है। उस राजकुमारी का नाम था रत्नादेवी। चित्र देखने पर मन्त्रियों ने भी उसे पसन्द किया। विवाह के लिए शुभ मुहूर्त भी ठीक हो गया।

महाराज शुभ घड़ी में बारात सजाकर अक्षरपुर गए और रत्नादेवी को ब्याह लाए। लेकिन न जाने क्यों उस ब्याह में अपशगुन ही अपशगुन हुए। लौटते वक्त बारात एक पेड़ के नीचे से गुजर रही थी। ठीक उसी समय एक डाली टूट कर बारातियों पर गिरी। पर राजा बाल बाल बच गया।

राजधानी में आने के बाद राजा ने मन्त्रियों और पुरोहितों को बुलाकर कहा -"तुम ही लोगों ने मेरे विवाह की बात उठाई। तुम्हीं ने लड़की पसन्द की। लगन भी तुम्हीं ने ठीक किया। फिर इस ब्याह में इतने अपशगुन क्यों हुए ? क्या तुम में से कोई बता सकता है कि इसका मतलब क्या है ?"

मन्त्रियों ने कई तरह की बातें बनाकर राजा की शङ्का दूर करनी चाही। लेकिन राजा का मन निशङ्क नहीं हुआ। जड़ी का असर अब तक मिट गया था। अपनी कसम उसे याद आ गई थी। इसलिए नई रानी से





उसका चित्त उचट गया। उसने उसके लिए अलग महल बनवा दिया। वह खुद सातों लड़कियों के साथ दूसरे महल में रहने लगा। वह कभी नई रानी के रनवास की तरफ न जाता था और न उनसे कोई बातें ही करना चाहता था।

एक दिन राजा को किसी काम से राज छोड़कर कहीं बाहर जाना पड़ा। लड़कियों को छोड़कर वह कहीं नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसने मन्त्रियों से कहा कि -"मैं राजकुमारियों को साथ ले जाऊंगा।"

यह बात जब रत्नादेवी को मालूम हुई तो उसने चुपके से अपनी सौतेली लड़कियों के पास जाकर कहा -"प्यारी बेटियों ! राजा तुम्हें भी अपने साथ परदेश ले जाना चाहते हैं। लेकिन तुम परदेश जाओगी तो बताओ, वहाँ तुम्हे कौन नहलाए-धुलाएगा ? कौन खिलाएगा-पिलायेगा ? तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ? इसलिए अच्छा हो, अगर तुम पिताजी से कह दो कि हम तुम्हारे साथ नहीं जाएँगे। कहो हम लोग यहाँ नई अम्मा के पास रहेंगी।"

राजा ने जब लड़कियों से चलने की बात उठाई तो उन्होंने इनकार कर दिया। राजा ने सोचा -"जब इन्हें नई रानी से इतना प्रेम है, तो हर्ज क्या ? इन्हें यही रहने दो।" वह उन्हें रत्नादेवी के महल में छोड़कर चला गया।

दूसरे दिन अमावस्या थी। रत्नादेवी ने सातों लड़कियों को अपने पास बुलाकर कहा -"बेटियों ! आज पूनम है। जो लड़कियाँ आज व्रत करती हैं और दिनभर उपवास करके रात को चन्द्रमा का मुँह देखने के बाद पारण करती हैं, उन्हें अच्छे वर मिलते हैं। तुम लोग भी आज उपवास करो न !"

भोली भाली लड़कियों ने पहले तो उसकी बात मान ली। लेकिन ज्यों ज्यों दिन चढ़ता गया, भूख के मरे उनकी अन्तड़ियाँ ऐंठने लगी और पेट में चूहे कूदने लगे। आखिर उन्होंने अपनी सौतेली माँ से कहा - "अच्छे पर मिले या न मिले, हमारी वला से। हम भूखी नहीं रह सकती। हमें खाना दो।"

यह सुनकर रानी ने मुँह बिगाड़ कर कहा -"कुलक्षणियाँ कहीं की। तो फिर तुम लोगों ने कहा क्यों कि हम व्रत करेंगे ? क्या मैं तुम्हारे लिए



हमेशा चूल्हे पर हाँडी चढ़ाई रहूँ ?" यह कहकर उसने सबको कस-कसके के दो-दो तमाचे लगा दिए। बेचारी बच्चियों से अब तक किसी ने ऐसा सलूक न किया था। सब सिसक सिसक कर रोने लगी। अब उन्हें पछतावा हुआ कि वह पिता के साथ क्यों न गई।

रानी ने फिर कहा -"व्रत करने वाली कभी बेकार नहीं बैठती। इसलिए तुम लोग घड़े उठाकर कुँए से पानी भर लाओ। यह कहकर उसने उनको सात फूटे घड़े दिए।

राजा की लाडली लड़कियाँ। हाय! उन्हें अपने हाथों काम करने की नौबत कहाँ आई



थी ? घड़े तो दूर; कभी लुटिया में भी उन्होंने पानी नहीं भरा था। फिर वह कुँए से पानी कैसे खींचती ? लेकिन बेचारी करें तो क्या ? सौतेली माँ का डर जो कँपा रहा था। उन्हें प्यास भी जोर से लग रही थी। डरती-डरती उन्होंने थोड़ा पानी माँगा तो सौतेली माँ ने जवाब दिया -"पहले पानी भर लाओ। तभी पीने को पानी मिलेगा।" बेचारी सातों बहने सात घड़े उठाकर कुँए की ओर चली। उनकी आँखों से टप टप आँसू बह रहे थे। मन में माँ की याद आ रही थी। माँ के सिवा उनकी सुध कौन लेता !

लक्ष्मी देवी को अपनी भूखी प्यासी सन्तान की पुकार सुनाई पड़ी तो उसने उस कुँए के पास केले के पेड़ उगा दिए। सातों बहनों ने जब पके हुए केले देखे, तो वे खुशी से उछल पड़ी। उन्होंने भरपेट केले खाए और फिर घड़े में पानी भरकर लौट पड़ी। लेकिन टूटे घड़े में पानी कैसे टिकता ! घड़े उठाते ही सारा पानी बह गया। उनके कपड़े भीग गए। जब तक हुए घर पहुँची तो घड़ों में बूँद भर पानी भी न रह गया। ये घड़े तो फूटे हैं मौसी !" लड़कियों ने सौतेली माँ से कहा।

"कलमुँहियो ! तुमने पानी तो भरा नहीं। ऊपर से घड़े भी फोड़ लाई।" यह कहकर नई रानी ने एक छड़ी उठाई और लगी उन्हें सटा-सट मारने। बेचारी तड़प तड़प कर रह गई। रोती रोती उन्होंने कहा -"मौसी ! हमें क्यों इस तरह सताती हो ? हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? खाना न सही क्या हमें पीने के लिए थोड़ा पानी भी न दोगी ?"

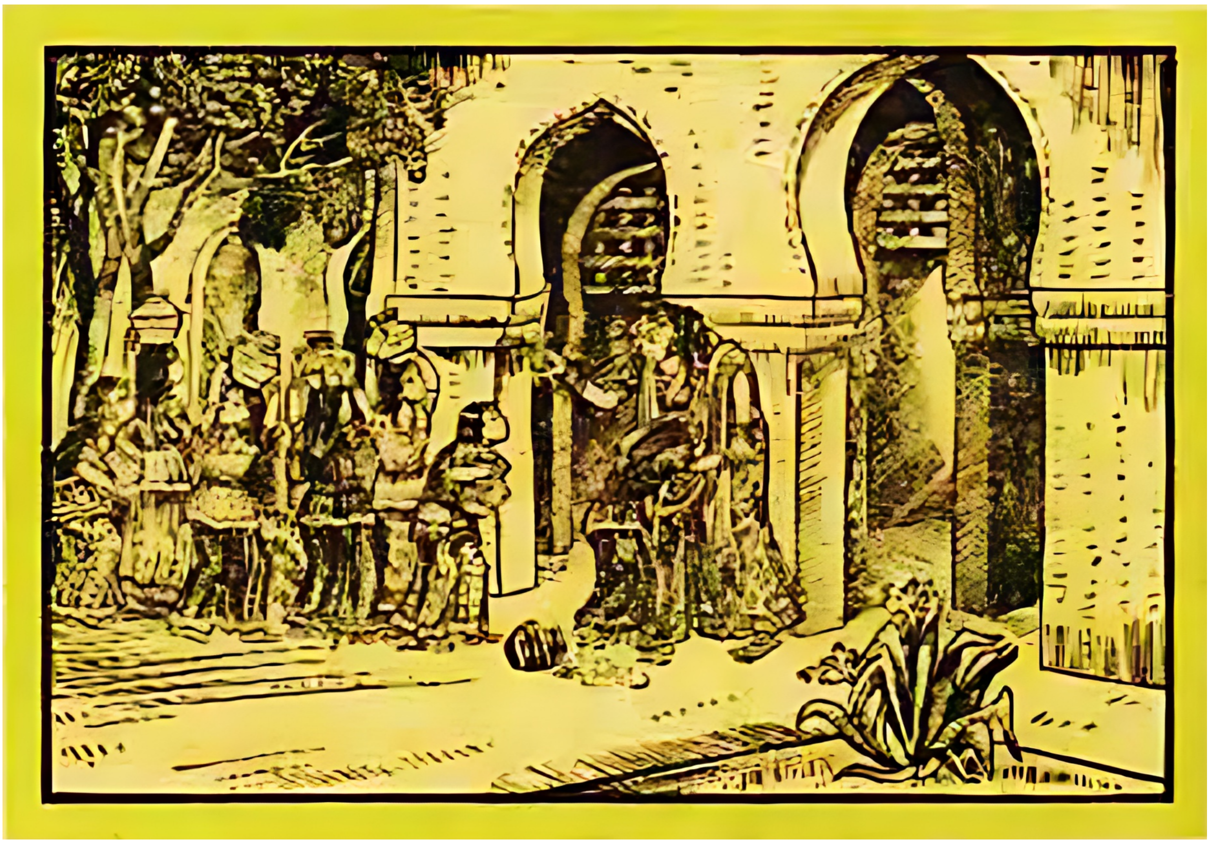
"अच्छा ठहरो ! अभी तुम्हारे लिए दूध ला देती हूँ।" यह कहकर रानी अन्दर गई। उसने सात लोटों में दूध भर कर

उसमें जहर मिला दिया और लाकर उन्हें दे दिया। बेचारी लड़कियों को क्या मालूम था ? निधड़क उसे पी गई। लेकिन पल में जहर ने अपना प्रभाव दिखाया। उनकी छाती धड़कने लगी। जीभ सुख गई और आँखें जलने लगी। उन्होंने कहा - "अरे ! यह दूध तो बहुत कड़वा है मौसी !"

"नहीं तो क्या तुम्हारे लिए अमृत रखा हुआ है यहाँ !" यह कहकर रानी ने उन सब को एक अन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया और बाहर से साँकल चढ़ा दी।

लक्ष्मी देवी ने जब अपनी अधमरी सन्तान को देखा, तो उसने जहर का प्रभाव दूर कर दिया। लड़कियाँ मीठी नींद में सो गई।

रत्नादेवी रात को निश्चित होकर सोई। उसने समझा कि सवेरे तक उनके कलेजे का काँटा दूर हो जाएगा। लेकिन जब सवेरे उठकर उसने उतावली के साथ कोठरी का दरवाजा खोला, तो उसके अचरज का ठिकाना न रहा। लड़कियाँ तो अभी जिन्दा थी। "मौसी ! चाँद उगा कि नहीं ?" उन्होंने पूछा। "अभी नहीं उगा है। तुम लोग सो



जाओ। जब उगेगा तो तुमको जगा दूँगी।" यह कहकर रानी ने फिर कोठरी का दरवाजा बन्द कर चली गई। उसे बड़ा अचरज हुआ कि यह लड़कियाँ कैसे बच गईं।

दूसरा दिन भी बीत गया। लड़कियों ने रानी से पूछा -"मौसी ! क्या चाँद अभी तक नहीं उगा ?" "चाँद उगा और डूब भी गया।" रानी ने कहा। "तब हमें खाना दो न!"

"तुम चाँद देखे बिना खा लोगी तो बूढ़े वर मिलेंगे।" रानी ने कहा।

"लेकिन हमें बड़ी भूख जो लग रही है। अब हम खाना खाए बिना नहीं रह सकती मौसी।" लड़कियों ने रोते हुए कहा।

"अच्छा ! तो नहा धोकर आ जाओ। मैं खाना परोसती हूँ।" रानी ने कहा। "लेकिन मौसी ! हमें अँधेरे में डर लगता है।" लड़कियों ने कहा।

"तुम्हें कोई भूत नहीं खा जाएगा। अच्छा चलो ! मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।" यह कहकर रानी उन्हें अपने साथ नगर के बाहर जङ्गल में एक उजड़े मन्दिर के पास ले गई। "तुम लोग अन्दर जाकर देवता को प्रणाम करो। तुम्हें अच्छा वर मिलेंगे।" यह कहकर रानी ने लड़कियों को अन्दर भेज कर बाहर से ताला लगा दिया और महल में लौट आई।

"वह अबोध लड़कियाँ नौ दिन तक बिना दाना पानी के उजड़े मन्दिर में बन्द रही। माँ के सिवा उनके सुखी देहें और चिपके हुए पेट देखकर कौन तरस खाए ?

लक्ष्मी देवी ने जब अपनी सन्तान को भूख से तड़पते हुए देखा, तो उसने मन्दिर में अनेकों शहद के छत्ते लगा दिए। अधमरी लड़कियों के मुँह में मधु की धार बरसने लगी। थोड़ी देर में उनकी भूख मिट गई और तन में जान आई।

[संशेष]




CHITRA